e-ISSN: 3048-8796

विकसित कृषि संकल्प अभियान एवं इसका महत्व

सरला यादव, शिव प्रताप सिंह एवं राजकुमार सिंह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, पटना 801506 (बिहार)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि में दिन–प्रतिदिन नए–नए आविष्कार हो रहे हैं परंतु किसानों को इसका समुचित लाभ नहीं मिल रहा है। कृषि क्षेत्र में किसानों को वर्तमान में कई चुनौतियां जैसे जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी, नए पद्धतियों एवं आविष्कारों का ज्ञान न होना, कम उत्पादकता इत्यादि का सामना करना पड़ रहा है। कृषि शोध एवं विज्ञान ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए नवाचार एवं आविष्कार किए हैं जिनको किसानों तक पहुँचाना आवश्यक है ताकि वे इसके द्वारा अपनी कृषि समस्याओं को दूर कर सकें एवं आर्थिक स्थिति को ठीक कर सकें। इसके लिए वर्ष 2025–26 में सरकार द्वारा "विकसित कृषि संकल्प अभियान" चलाया जा गया है जिसका उद्देश्य कृषि में नवाचार, पारम्परिक खेती से आधुनिक, वैज्ञानिक और टिकाऊ खेती की ओर किसानों को ले जाना है। इस अभियान के माध्यम से नवीन आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत बीजों और वैज्ञानिक पद्धतियों की जानकारी दी गई है जिससे वह कम लागत में अधिक उत्पादन तथा नई फसलों को उगाकर उत्पादन के साथ अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। यह रबी ऋतु में चलाया गया है।

मृदा संरक्षण

इस अभियान के अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य एवं संरचना को बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया गया है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के माध्यम से मिट्टी की जांच कर संतुलित उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक एवं जैविक खेती को भी प्रोत्साहित किया गया है। जैसा कि हम जानते हैं कि आधुनिक युग में रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग जाने–अनजाने में हमारे किसान भाई–बंधुओं द्वारा किया जा रहा है। जिसका दुष्प्रभाव हमारे वातावरण एवं स्वास्थ्य पर आए दिन देखने को मिलता है। इस अभियान के माध्यम से स्वास्थ्यवर्धक भोजन तथा उत्पाद उगाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। जिसके माध्यम से हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान युग में गंभीर एवं जानलेवा बीमारियां जो कि वर्तमान चिकित्सा पद्धति से ठीक नहीं हो रही हैं उनके प्रभाव को कम कर सकते हैं।

जल संरक्षण

विकसित कृषि संकल्प अभियान में मृदा स्वास्थ्य के साथ–साथ जल संरक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। इसमें कुशल सिंचाई पद्धतियां जैसे कि ड्रिप एवं स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों तथा अधिक जल उत्पादकता के माध्यम से जल की बचत के साथ–साथ फसल उत्पादन तथा गुणवत्ता में सुधार किया जाता है। सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को अपनाने से जल की बचत होती है तथा फसलों को आवश्यक मात्रा में ही जरूरत के हिसाब से ही पानी दिया जाता है। इन पद्धतियों के माध्यम से पानी की बर्बादी को रोका जाता है तथा अतिरिक्त वर्षा जल संचयन और जल उपयोग दक्षता को बढ़ाया जा सकता है। पानी की कमी से जूझ रहे क्षेत्रों में खेती को स्थायित्व मिलता है। जैसा कि हम जानते हैं कि हमारी पृथ्वी पर जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इसका संरक्षण समयानुसार हमारी जिम्मेदारी है।

फोटो 1: वैज्ञानिक किसानों की बातचीत

e-ISSN: 3048-8796

फोटो 2: वैज्ञानिक –किसान कार्यशाला

फोटो 3: वैज्ञानिक पद्धति विषय में बातचीत

डिजिटल एवं स्मार्ट कृषि

डिजिटल एवं स्मार्ट कृषि इस अभियान का अभिन्न हिस्सा है। किसानों को मौसम आधारित कृषि सलाह, मोबाइल एप्स एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से फसल उत्पादन, कीट नियंत्रण और बाजार की उपलब्धता एवं भाव की जानकारी प्रदान की जाती है जिससे किसान सही समय पर कृषि उत्पाद निष्पादन पर निर्णय ले सकते हैं। कृषि एवं मौसम आधारित सलाह और आधुनिक कृषि यंत्रों से खेती को अधिक लाभकारी बनाने का प्रयास किया गया है। आधुनिक तकनीक के प्रयोग से कृषि को एक लाभकारी एवं सम्मानजनक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस अभियान के सफल क्रियान्वयन में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा कृषि विश्वविद्यालयों ने अहम भूमिका निभाई है। इनके माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम और प्रत्यक्ष प्रदर्शन उपलब्ध कराए जाते हैं। छोटे एवं सीमांत किसानों, युवा किसानों तथा किसान उत्पादक संगठनों को इस अभियान से विशेष लाभ मिला है।

कृषि पर निर्भरता

वास्तविक तौर पर भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था तथा लगभग 70% महिलाएं एवं 60% पुरुष प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर हैं। कृषि न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है बल्कि ग्रामीण जीवन एवं रोजगार का भी मुख्य साधन है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, बढ़ती उत्पादन लागत किसानों की आय में अस्थिरता जैसी चुनौतियां कृषि क्षेत्र के सामने हैं। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए यह अभियान एक मील का पत्थर साबित हुआ है। 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' खरीफ का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि को पारम्परिक पद्धतियों के साथ टिकाऊ खेती की दिशा में ले जाना है। इस अभियान में उन्नत बीज के इस्तेमाल, अनुशंसित मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया गया है। मिट्टी की जांच के उपरांत किसानों को संतुलित उर्वरकों के प्रयोग की सलाह दी जाती है। जिससे भूमि की उर्वरता बनी रहे तथा अनावश्यक रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को रोका जा सके। अनावश्यक प्रयोग से अधिक लागत तथा मिट्टी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है। साथ ही प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देकर पर्यावरण संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य एवं जीव रक्षा पर भी ध्यान दिया गया है। यह हमारी भविष्य की पीढ़ी के लिए स्वस्थ वातावरण, स्वस्थ भोजन तथा प्राकृतिक भंडार को संरक्षित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

फोटो 4: किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए वर्कशॉप

फोटो 5: वैज्ञानिक किसानों की बातचीत और सूचना प्रसार

फोटो 6: वैज्ञानिक किसानों की बैठक

महत्व

कृषि में जलवायु परिवर्तन, सीमित भूमि और बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्य सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ आ रही हैं। ऐसे में कृषि में आधुनिक आविष्कार एवं अनुसंधान किए गये हैं जो इन चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सकते हैं। जैसे जलवायु परिवर्तन की समस्या के लिए ऐसे बीज विकसित किए गये हैं जो कम पानी में अधिक उपज दे सकते हैं। इसी प्रकार जल की समस्या के लिए सिंचाई से जुड़ी योजनाओं को तकनीक विकसित किए गये जो जल का समुचित उपयोग करती हैं। उर्वरक और संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु नये–नये अनुसंधान हुए हैं जो फसल की उत्पादकता को बढ़ा सकते हैं। परंपरागत खेती में इनसे संबंधित समस्याओं का किसानों को सामना करना पड़ता है जो के ज्ञान के अभाव में नुकसान कर बैठते हैं। इसलिए सरकार ने कृषि क्षेत्र में नये–नये आविष्कारों को किसानों तक पहुँचाने में मदद मिल रही है। वैज्ञानिक किसानों के खेतों तक जाकर नये नवाचार, आधुनिक तकनीकों एवं आविष्कारों को पहुँचा रहे हैं जिससे किसान लाभान्वित हो सकते हैं।

निष्कर्ष

जागरूकता कार्यक्रम विभिन्न संस्थानों में कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों द्वारा गठित टीम के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण तथा कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से संबंधित प्रक्षत्र की समस्याएं अंकित कर उनका समाधान साझा कर मौजूदा समस्याओं को हल करने की कोशिश की गई। इस अभियान से लोगों, किसानों तथा ग्रामीणों में आधुनिक कृषि पद्धतियों की जानकारी का आदान–प्रदान किया गया। विकसित कृषि संकल्प अभियान सरकार द्वारा उठाया गया सकारात्मक कदम है। इससे किसानों को कृषि चुनौतियों का सामना करने में मदद मिल रही है और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की भरपूर संभावनाएँ हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि विकसित कृषि संकल्प अभियान भारतीय कृषि को आत्मनिर्भर, आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल बनाने की दिशा में एक सशक्त पहल है। यदि इस अभियान को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए और किसानों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो तो यह न केवल किसानों की आय में वृद्धि करेगा बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सक्षम है।

Corresponding E-mail:
sarlayadavbhu@gmail.com